बाल भारती पब्लिक स्कूल पीतमपुरा
दिल्ली – 110034

साप्ताहिक योजना

सप्ताह-**2-6**नवंबर

कालांश-**3**

कक्षा- दशमी

विषय- संस्कृत

उपविषय-सूक्तयः

शिक्षणअधिगम- छात्र पाठ पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

सहायक सामग्री - ई -पाठ , अभ्यास पत्रिका ,यू ट्यूब लिंक
https://youtu.be/09NfI6o_LgM
https://youtu.be/5qjFUbHTWjE

BBPS, PITAMPURA

नवमः पाठः - सूक्तयः (सूक्तियाँ)

1. पिता बचपन में पुत्र को महान् विद्याधन देता है। इसके पिता ने क्या तप किया, यह कथन उनके प्रति कृतज्ञता है।

2. जैसी सरलता मन में वैसी यदि वाणी में हो, उसे ही महात्मा लोग वास्तव में समानता कहते हैं।

3. जो धर्मयुक्त वाणी को छोड़कर कठोर वाणी को बोलता है। वह मूर्खबुद्धि पके हुए फल को छोड़कर कच्चे फल को खाता है।

4. इस संसार में विद्वान् ही आँखों वाले कहे गए हैं। दूसरों के मुख पर जो आँखे हैं वे तो केवल नाम की ही हैं।

5. जिस किसी के भी द्वारा जो कहा जाए उसके वास्तविक अर्थ का निर्णय जिससे किया जा सकता है, वही विवेक (ऐसा) कहा गया है।

6. (जो) मन्त्री बोलने में चतुर, धैर्यवान् (और) सभा में भी निडर है वह किसी भी प्रकार से दूसरों के द्वारा अपमानित नहीं होता।

7. जो अपना कल्याण और अत्यधिक सुख चाहता है वह दूसरों के लिए कभी भी बुरा कर्म न करे।

8. सदाचार पहला धर्म है, यह विद्वानों का वचन है, इसलिए सदाचार की प्राणों से भी अधिक विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिए।

BBPS, PITAMPURA

अन्वय:

1. पिता बाल्ये पुत्राय महत् विद्याधनं यच्छति। अस्य पिता किं तपः तेपे इति उक्तिः तत्कृतज्ञता।

2. यथा अवक्रता चित्ते तथा यदि वाचि भवेत्। तत् एव महात्मानः तथ्यतः समत्वम् इति आहुः।

3. यः धर्मप्रदां वाचं त्यक्त्वा परुषां अभ्युदीरयेत्। (सः) विमूढधीः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं भुङ्क्ते।

4. अस्मिन् लोके विद्वांसः एव चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः। अन्येषां वदने तु ये ते नामनी चक्षुः मते।

5. येन केन अपि यत् प्रोक्तं तस्य तत्वार्थनिर्णयः येन कर्तुं शक्यः भवेत् सः विवेक इति ईरितः।

6. (यः) मन्त्री वाक्पटुः, धैर्यवान्, सभायाम् अपि अकातरः सः केन अपि प्रकारेण परैः न परिभूयते।

7. यः आत्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च यच्छति। सः परेभ्यः कदा अपि च अहितं कर्म न कुर्यात्।

8. आचारः प्रथमो धर्मः इति एतत् विदुषां वचः। तस्मात् सदाचारं प्राणेभ्यः अपि विशेषतः रक्षेत्।

—×— —×—